त्रिमासिक कृषि पत्रिका

जवाहर कृषि संदेश

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय

50 years 1964-2014 JNKVV Golden Jubilee Year
स्वर्ण जयंती वर्ष 2014

वर्ष : 6 अंक : 23 कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ (म.प्र.) जनवरी से मार्च 2014

संरक्षक
डॉ. व्ही. एस. तोमर
कुलपति, ज.ने.कृ.वि.वि. जबलपुर

मार्गदर्शक
डॉ. पी.के.मिश्रा
संचालक विस्तार सेवायें
ज.ने.कृ.वि.वि. जबलपुर

डॉ. आर.के. पाठक
अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय
टीकमगढ़

डॉ. अनुपम मिश्रा
आंचलिक परियोजना संचालक,
आंचलिक ईकाई-VII
भा.कृ.अ.परि., जबलपुर

मुख्य सम्पादक-
डॉ. शैलेन्द्र सिंह गौतम
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
विशेषज्ञ (उद्यानिकी)

सम्पादक मण्डल
डॉ. संदीप खरे
विशेषज्ञ (पशुपालन)
डॉ. आर.के. प्रजापति
विशेषज्ञ (पौध संरक्षण)
श्री बी.एल. साहू
विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)

प्रकाशक :
कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ (म.प्र.)
सम्पर्क-
फोन : 07683-244934 (ऑ.)
फैक्स : 07683-245034
ई-मेल : kvktikamgarh@rediffmail.com

॥ दो शब्द ॥

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर की स्थापना के पचासवीं वर्षगांठ के शुभअवसर पर टीकमगढ़ जिले के समस्त कृषक भाईयों/बहिनों का अभिनन्दन है। कृषि विज्ञान केन्द्र टीकमगढ़ त्रिमासिक कृषि पत्रिका का प्रकाशन करता आ रहा है। इसमें किसान भाई आगामी तीन माह में कौन-कौन सी (खेती, उद्यानिकी, पशुपालन) तकनीक अपनायें जिससे उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि की जा सके का समावेश किया जाता है। इसी क्रम में जनवरी से मार्च 2014 तक इस पत्रिका में प्रकाशित की जा रही है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इन तकनीकियों को अपनाकर किसान भाई कृषि उपज में वृद्धि कर सकेगें। मैं कृषि विज्ञान केन्द्र के समस्त वैज्ञानको कों जवाहर कृषि संदेश प्रकाशन पर नये वर्ष की शुभकामनाओं के साथ प्रकाशन पर धन्यवाद देता हूँ।

डॉ. पी.के. मिश्रा
संचालक, विस्तार सेवायें

मान्नीय कुलपति जी ने किया कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ का भ्रमण

जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के मान्नीय कुलपति प्रो. विजय सिंह तोमर ने कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ का भ्रमण किया । मान्नीय कुलपति जी ने केन्द्र द्वारा लगायें गये फसल संग्रहालय अवलोकन करते हुऐ कार्यो पर प्रसन्ता व्यक्त की। इस अवसर पर केन्द्र द्वारा रबी फसलों के प्रजातियों की प्रर्दशनी भी लगायी गयी थी । केन्द्र के सभागार में आयोजित बैठक में मान्नीय कुलपति का स्वागत एवं सम्मान कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़ के अधिष्ठाता, डॉ. आर.के. पाठक एवं प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ डॉ. एस.एस. गौतम ने किया । इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ द्वारा कृषकों के तकनीकी ज्ञान में वृद्धि हेतु 8 फोल्डरो का विमोचन मान्नीय कुलपति जी ने किया । चर्चा के दौरान कुलपति जी लघु सीमान्त कृषकों को केन्द्र से जोडने एवं किसी एक विषय को चुनकर कार्य करने की सलाह दी जिससे केन्द्र की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर हो सकें।

इस अवसर पर केन्द्र के वैज्ञानिक श्री बी. एल. साहू, डॉ. आर.के. प्रजापित एवं डॉ. एस.के. खरे उपस्थित रहें ।

रबी फसलों में पौध संरक्षण

चना-

(1) चने में इल्ली फली भेदक के प्रबंधन के लिये परिभक्षी चिड़ियों को आकर्षित करने के लिये लगभग 50 लकड़ियों की टी (T) आकार की खपचियाँ प्रति हैक्टेयर की दर से बना कर चने की फसल की ऊँचाई से 10-20 से.मी. अधिक ऊँचाई में लगाये ।

(2) चने में इल्ली रसायनिक प्रबंधन हेतु क्विनाल फॉस 2 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें । यदि इल्ली फली बनाने के समय दिखाई दे तो इण्डोक्सीकार्व नामक दवा 7 मि.ली./15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें ।

(3) चने की खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण खुरपी अथवा हैण्ड हो से करें जिससे फसल में नमी सरंक्षित होगी ।

(4) फसलों को पाले से बचाने हेतु खेत के चारों तरफ धुआँ करें अथवा सिंचाई करके नमी बनाये रखें ।

सरसों-

(1) माहू कीट प्रबन्धन हेतु- डेमेक्रोन (फास्फोमिडान) 300 मि.ली. या डाइमिथिऐट 100 मि.ली. 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें एवं दूसरा छिड़काव पहले छिड़काव के 15 दिन बाद करें ।

(2) चूर्णिला फफूंदी प्रबन्धन हेतु- सल्फैक्स (सल्फर 80 डब्ल्यू.पी.)की 3 मि.ली. मात्रा/लीटर पानी में मिलाकर 2-3 छिड़काव 15 दिन के अन्तर पर करें ।

गेहूँ-

(1) गेहूँ में गरुआ रोग से प्रभावित पात्तियों पर नारंगी भूरे रंग के धब्बे या पीले रंग के धब्बे उभर आते है । जिनेब दवा 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें ।

(2) गेहूँ में कंडवा रोग प्रभावित पौधों की बालियाँ पहले निकल आती है । इन पर काला चूर्ण भर जाता है। रोगग्रस्त पौधों को उखाड कर जला देना चाहिये। बीज बोने से पहले बीटावेक्स 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचार कर के बोना चाहिये ।

(3) गेहूँ की खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप होने पर क्लोरोपाइरीफास 20 ई.सी. 1.25 लीटर दवा प्रति हैक्टेयर की दर से दवा को सिंचाई के पानी के साथ दें । असिंचित दशा में उपरोक्त दवा की मात्रा 3 लीटर पानी में घोलकर 50 कि.ग्रा. रेत में मिलाकर खेत में फैलाकर पानी लगायें ।

सब्जियाँ-

सब्जियों में रस चूसने वाले कीटों के लिये मेटासिस्टोक्स दवा 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी एवं फल भेदक इल्लीयों के लिये मेलाथियान 1 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर फसल पर 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव करें । तथा सब्जियों का उपयोग दवा छिड़काव से एक सप्ताह तक न करें ।

18वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति बैठक की कार्यवाही का प्रतिवेदनः

कृषि विज्ञान केन्द, टीकमगढ (म0प्र0) की 18वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की बैठक आज दिनांक 20 दिसम्बर 2013 को केन्द्र के सभागार में संपन्न हुई ।

18वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति बैठक का शुभारंभ समिति की अध्यक्षता डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, संयुक्त संचालक विस्तार सेवायें, ज0ने0कृ0वि0वि0, जबलपुर एवं डॉ आर. के. पाठक, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय टीकमगढ के मुख्य आतिथ्य में माँ सरस्वती के तैल चित्र पर दीप प्रज्जवलन एवं वंदना के साथ शुरू हुई ।

18वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति बैठक की प्रमुख कार्यवाही में प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस.एस. गौतम द्वारा सर्वप्रथम समिति के सभी माननीय् सदस्यों के स्वागत एवं अभिनन्दन भाषण से हुई। श्री बी.एल. साहू, विषय विस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) द्वारा विगत वर्षों से कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख करते हुए खरीफ- 2013 में किये गये प्रक्षेत्र परीक्षण, प्रदर्शन एवं अन्य कृषि विस्तार गतिविधियों का प्रस्तुतीकरण किया तथा विगत बैठक में दिये गये माननीय् सदस्यों के सुझाव की कार्यवाही पर प्रकाश डाला । इसके बाद प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. एस.एस. गौतम, कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्रस्तावित रबी- 2013-14 के प्रक्षेत्र परीक्षण, प्रक्षेत्र प्रदर्शन तथा अन्य कृषि विस्तार गति-विधियों का प्रस्तुतीकरण किया गया ।

माननीय् सदस्यों द्वारा 18वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति बैठक में दिये गये सुझाव इस प्रकार है :- डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, संयुक्त संचालक, विस्तार सेवायें, ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर द्वारा ये की आंवले के बाग में अन्तवर्ती फसल के बारे में प्रयोग पहले केन्द्र पर करने के बाद किसान को बताये। गेंदे में पीली प्रजातियों को सब्जियों के बीच में लगाने के लिये प्रेरित करें। बायो-गैस सयंत्रण एवं स्लेरी के उपयोग पर फिल्म बनाये। कृषि उपयोगी यंत्रों के उपयोग से आये बढ़ाने के तरीकों को कृषकों को बताये। डॉ आर. के. पाठक, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय टीकमगढ ने सुझाव दिये की वैज्ञानिक मुर्गी एवं मछलीपालन के दिये प्रेरित करें। श्री भानू प्रसाद शर्मा उप-संचालक परियोजना "आत्मा" ने सुझाव दिया कि अगली खरीफ में सोयाबीन बीज की जिले में उपलब्धता के बारे में प्रयास केन्द्र के सहयोग से भी किया जाये। श्री. आर.के. मिश्रा, स.म.आ. मछलीपालन ने सुझाव दिया कि केन्द्र पर मछली पालन विषय पर वैज्ञानिक की उपलब्धता समय-समय पर कराई जा सके, ताकि मछली पालक कृषकों को प्रशिक्षण दिया जा सकें ।

माननीय् सदस्यों के सुझावों के बाद डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, (अध्यक्ष) 18वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति ने सभी सदस्यों के सुझावों का केन्द्र द्वारा कार्यक्रम में शामिल करने को निर्देशित किया तथा जिले के विभिन्न विभागों के माननीय् सदस्यों से अपने अनुभव केन्द्र के वैज्ञानिकों के साथ समय-समय पर सांझा करते रहने के लिये कहा जिससे जिले का अच्छा विकास किया जा सकें। केन्द्र पर किये गये प्रगति कार्यक्रमों एवं कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता के नेतृत्व की सराहना की । मुख्य अतिथि डॉ. आर.के. पाठक ने अपने सुझावों के साथ-साथ केन्द्र के वैज्ञानिकों को कार्यक्रमो को और प्रभावी बनाने के लिए कहा । अध्यक्ष महोदय् ने फसल संग्रहालय का भ्रमण किया तथा केन्द्र द्वारा रबी- 2013-14 फसल संग्रहालय की सराहना की ।

बैठक के अंत में सभी माननीय् सदस्यों का आभार प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस.एस. गौतम ने माना तथा प्रतिवेदन डॉ. आर.के. प्रजापति, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पौध संरक्षण) ने तैयार किया।

अनाज भण्डारण

भारत एक कृषि प्रधान देश है इसकी बढ़ती आबादी के लिये खाद्यान्न पैदावार की वृद्धि के साथ ही साथ उसकी गुणवत्ता तथा मात्रा को उसी रुप में बनाए रखने की आवश्यकता किसानों तथा व्यापारियों दोनों को है । अनाज की बचत अनाज के गुणवत्ता की ओर विशेष ध्यान ना देने के कारण खाद्यान्नों को बहुत अधिक मात्रा में नुकसान हो रहा है । कृषक भाई इस प्रकार के नुकसान को कम महत्व देते हुए प्रायः उपलब्ध करना हमारा दायित्व है । आधुनिक भण्डारण पात्रों में नमी व चूहों से अनाज को रोगाणु रहित में भण्डारित किया सकता है ।

सुरक्षित अनाज भण्डारण के सिद्धांत-अनाज को भण्डार से पूर्ण अच्छी तरह सुखा लें जिसमें नमी की मात्रा 10 प्रतिशत से अधिक न हो । अनाज से भरे बौरों को लकड़ी की पट्टियों पर रखें जिससे नमी अथवा सीलन से बोरे प्रभावित न हो । जहां तक संभव हो सके धातु भण्डारण पात्रों का ही प्रयोग करें । कीड़ों से नुकसान को समाप्त करने के लिए धूम्र एल्युमीनियम फास्फाइड या जिंक फास्फाइड दवा आटे में मिलाकर रख दें । दालों पर सरसों के तेल का लेप करके भण्डारण करने पर भी धुन से बचाया जा सकता है । जिस भण्डारण पात्र में अनाज भण्डारण करना हो उसके नीचे व ऊपर नीम की पत्तियां बिछा दें । भण्डारित अनाज के नुकसान में कीड़ो के समान ही चूहों का भी योगदान होता है । चूहे न केवल भण्डारित अनाज को खाते ही नहीं अपुति बर्बाद भी करते है । एक चूहा अपने मलमूत्र से खाने के 10 गुना तक अनाज नष्ट करते है ।

चूहा रोकथाम के उपाय- भण्डारण पात्रों को चूहा रोधी बनाकर। चूहों को चूहेदानी की सहायता से पकड़कर । जहरीले चारे जैसे जिंक फास्फाइड का उपयोग कर चूहों का नियंत्रण कर सकते है ।

कीट वर्ग- भण्डार में विभिन्न कीट भी अनाज को क्षति पहुंचाते है । अनाज के शत्रु हमारे कुल उत्पादन का लगभग 9-10 प्रतिशत प्रति वर्ष नष्ट कर देते है । भण्डार ग्रह की अनूकूलता व परिस्थितियां इन कीटों की संख्या व प्रकोप को प्रभावित करती है ।

भण्डारित अनाज में नमी की मात्रा सुरक्षित भण्डारण के लिए अनाज में अधिकतम 10 प्रतिशत या इससे कम नहीं होना चाहिए। ऐसा होने पर बीजावरण में कठोरता बनी रहती है जिससे कीट व अन्य सूक्ष्म जीवाणु अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाते है ।

खपरा बीटल (भृंग)- यह गेहूं के साथ-साथ सभी अनाजों, दलहनों व तिलहनो को नुकसान पहुंचाता है । इसकी इल्ली दाने के अन्दर व सतह दोनों को नुकसान पहुंचाती है ।

अनाज छेदक- इसकी इल्ली तथा वयस्क अनाज को नष्ट कर चूर्ण (दुर्गन्धयुक्त) बना देते है ।

अनाज का धुन- यह अनाज के साथ अनाज उत्पादों दोनों को खाता है जबकि इल्ली दानों को खोखला कर देती है ।

टारा भृंग- इसकी इल्ली व वयस्क दोनों ही गेहूं, मक्का, ज्वार, मैंदा, सूजी को क्षति पहुंचाते है ।

अनाज का पंतगा- इसकी इल्ली अनाज को खराब कर देती है तथा इसकी विशेषता है कि नुकसान पहुंचाए अनाज के गुच्छे बन जाते है ।

दाल की बीटल (भृंग)- यह दलहनों को नुकसान पहुंचाती है । यह खेत से ही क्रियाशील हो जाती है ।

गोदाम का पंतगा- यह खेत में ही सक्रिय हो जाता है । भण्डारण ग्रह में इसकी इल्ली दानों को खाकर अन्दर ही अन्दर खोखला कर देती है ।

कीट वर्ग के रोकथाम से उपाय- भण्डारण के अच्छे उपायों का पालन करने के साथ साथ भण्डारण के पूर्व भण्डार गृह, पात्रों तथा बोरों पर मैलाथियान 50 ईसी घोल का 1:100 बनाकर छिड़काव करें ।

नियंत्रण- प्रायः धुम्र कीटनाशक जैसे ई.डी.वी. एल्यूमीनियम फॉस्फाइड का प्रयोग कीट नियंत्रण में किया जाता है । इसका उपयोग 3 मि.ली. प्रति 100 किलो अनाज पर प्रभावी होता है । एल्यूमीनियम फॉस्फाइड की 2 ग्राम की 1-2 गोली एक टन अनाज के प्रधुमन के लिए प्रभावी होती है ।

पशुओं में खुरपका मुँहपका (एफ.एम.डी.)

(1) रोग क्या है-

खुरपका या मुँह पका रोग एक विषाणु जनित रोग है, जो जुगाली करने वाले पालतु एवं वन्य पशुओं और शूकरों में होता है । यह अति संक्रामक और छूत वाला रोग है, जिसमें पशु के मुँहखुरी, खुरचपका, बैगा रोग के नाम से जाना जाता है । इस विषाणु की 4 मुख्य टाईप होती है । ओ, ए, सी, एशिया-1 जो सारे देश में इस बीमारी का कारण है । यह रोग गौ वंशीय, भैंस वंशीय, भेड एवं सुअरों में फैलता है। रोग ग्रसित सुअरों में मृत्युदर अत्याधिक है । अन्य पशुओं की कार्य क्षमता प्रभावित होती है । यह रोग बसंत तथा वर्षा ऋतु में अधिक होता है । यह एक छूत का रोग है । अतः रोगग्रस्त पशु के संपर्क में स्वस्थ पशु आने से उसे यह रोग हो जाता है ।

(2) रोग के लक्षण-

1. बुखार आना, खाना-पीना जुगाली बन्द करना ।
2. मुँह में छाले आना एवं लार बहना ।
3. खुर के बीच में दाने तथा छाले पड़ जाते है, पशु लंगडाने लगता है ।
4. बीमार पशु के थन में छाले पड़ जाते है तथा घाव बन जाता है, पशु का दूध कम हो जाता है ।
5. पशु बहुत दुर्बल हो जाता है । सामान्यतः रोग 2 सप्ताह तक चलता है ।

(3) रोग उपचार-

1.मुँह के छालों को किसी अच्छे एन्टीसेप्टिक से धोना चाहिये जैसे -पोटाश, फिटकरी, बोरिक एसिड अथवा मुँह के छालों पर बारोग्लिसरीन का लेप किया जा सकता है । उपरोक्त औषधियां प्राप्त ना होने की स्थिति में नीम की पत्तियों को उबालकर उसके पानी से मुँह एवं खुर धोये जावें ।

2. पैर की छालों को पानी से साफ कर, फिनाईल अथवा बीटाडीन के घोल में कई बार धोना चाहिये। खुर के बीच के घावों पर एन्टीसेप्टिक पावडर छिड़काव किया जाना चाहिये ।

3. थन में रोग होने पर थन से दूध निकालकर थनों को बोरिक एसिड से धोना चाहिये तथा छालों पर एन्टीसेप्टिक मरहम लगाना चाहिये ।

4. पशु चिकित्सक सहायक शल्यज्ञ से संपर्क स्थापित कर एन्टीबायोटिक के इन्जेक्शन लगवाना चाहिये ।

(4) रोकथाम के उपाय-

1. पशु को रोग से बचाने हेतु सबसे उत्तम साधन है, पशु का इस बीमारी से प्रतिबंधात्मक टीकाकरण कराना । इस हेतु अपने समीपस्थ पशु चिकित्सालय से संपर्क कर सभी पशुओं को इस रोग का प्रतिबंधात्मक टीकाकरण करवाना चाहियें । टीकाकरण में प्राथमिकता दुधारु /संकर पशुओं, बैलों को दिया जाना चाहिये । यह टीका पशु चिकित्सा विभाग द्वारा 50 प्रतिशत अनुदान पर लगाया जाता है । इस टीके को 6 माह उम्र के बछड़ा/बछिया, पाडी को लगवाना चाहिये ।
2. रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखना चाहिये ।
3. महामारी के समय पशु को इधर-उधर रखना चाहिये ।

भिण्डी की उन्नत खेती

भूमि- अच्छे जल निकास वाली एवं कार्बनिक पदार्थ युक्त दोमट भूमि उपयुक्त होती है ।

उन्नत किस्में- वीआरओ 6, पूसा मखमली पूसा सावनी, पूसा सलेक्सन 1, 2,3

बौने का समय- ग्रीष्म ऋतु की फसल- जनवरी से मार्च
वर्षा ऋतु की फसल- जून से जुलाई ।

बीज की मात्रा- ग्रीष्म ऋतु- 18-20 किलो बीज/हेक्टेयर ।
वर्षा ऋतु- 10-12 किलो बीज प्रति हैक्टेयर ।

बीजोपचार- थायरम 3 ग्राम दवा प्रति किलो ग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करें।

बोने की दूरी- ग्रीष्म ऋतु- 30X30 से.मी (पौधXलाइन)
वर्षा ऋतु - 45X45 (पौधXलाइन)

भिण्डी की अच्छी फसल के लिये 30 टन गोबर की सड़ी हुई खाद बोने के 2 सप्ताह पहले मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिये । इसके बाद 300 किलो अमोनियम सल्फेट, 350 किलो सुपर फास्फेट तथा 125 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश बुबाई से पहले कूड में देनी चाहिये । एक महीने बाद 300 किलो अमोनियम सल्फेड की ट्राप ड्रेसिंग करें ।

सिंचाई- बोने के समय यदि नमी की कमी हो तो एक हल्की सिंचाई करके बोबाई करनी चाहिये । इसके बाद गर्मियों में एक सप्ताह के अन्तर पर तथा वर्षा में जब पानी की आवश्यकता हो सिंचाई करें ।

खरपतवार नियंत्रण एवं अंतःक्रियायें- ग्रीष्म ऋतु की फसल में 3-4 गुड़ाई तथा वर्षा की फसल में 2-3 गुड़ाई करें । वर्षा की फसल में 2-3 गुडाई करें वर्षा की फसल में मिट्टी भी चढ़ायें ।

तोडाई- भिण्डी की प्रथम फली बनने के बाद प्रत्येक दूसरे तीसरे दिन फलियों की तुड़ाई करते रहना चाहिये । तुड़ाई का सबसे अच्छा समय फूल खिलने के 6-7 दिन बाद होता है ।

पैदावार- 50-80 कुण्डल /हैक्टेयर

कीट प्रबंधन-

भिण्डी तना छेदक- रोकथाम मेलाथियान 50 ईसी. का 1.5 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें ।

जेसिड- यह पत्तियों का रस चूस लेते है जिससे पत्तियां सिकुड जाती है ।

रोकथाम- डाईमेथोऐट 35 ईसी. का 2 मिली./पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें ।

आम में खाद एवं उर्वरक प्रबंधन-

एक वर्ष के पौधे के लिये (प्रति पौधा)- गोबर की खाद- 10 कि.ग्रा. नाइट्रोजन 100 ग्राम, फास्फोरस-75 ग्राम, पोटास-100 ग्राम एक वर्ष के बाद पौधे को दी जाने वाली खाद की मात्रा एक वर्ष के पौधे को दी जाने वाली मात्रा की आयु से गुणा करके देते है जैसे 2 वर्ष के पौधे के लिये गोबर की खाद 10X2 20 कि. ग्रा. नाइट्रोजन 100X2 200 ग्राम, फास्फोरस 75X2-150 ग्राम तथा पोटाश 100X2-200 ग्राम, देनी चाहिये। खाद की मात्रा 10 वर्ष तक इसी प्रकार देते है । फिर पौधे को 10 वर्ष की आयु वाले पौधे के समान ही खाद देते है । स्प्रे के रुप में-प्रति वर्ष जिंक सल्फेट तथा कॉपर सल्फेट के 0.2 प्रति सान्द्रता के घोल का पत्तियों पर छिडकाव करें । सुहागा 0.01 प्रति सांन्द्रता के घोल का पत्तियों पर दो बार छिड़काव करना चाहिये ।

आम में कीट नियंत्रण- आम का भुनगा (मैंगो हॉपर) यह एक छोटा फुदकने वाले मटमेले रंग का कीट होता है । इस कीट का निम्फ तथा वयस्क पत्तियों और बौर (फूल) का रस चूसता है । जिससे फल कम बनते है ।

रोकथाम- तीन छिड़काव मोनोकोटोफास 0.04 प्रतिशत (1 मि.ली. नुवान प्रति लीटर पानी में) पहला फूल आने की प्रारम्भिक अवस्था, दूसरा फल मटर के आकार के हो, तीसरा छिड़काव दूसरे छिड़काव के 15 दिन बाद ।

चेतावनी- इस बात का ध्यान अवश्य रखे कि जब फूल अपनी खिलने की पूर्ण अवस्था पर हो तब दवाओं का छिड़काव न करें । आम का मूँगा (मेंगो मिली बग) इस कीट को चेपा या गुझिया भी कहते है इसकी मादा पंखहीन होती है यह सफेद रंग चपटी होती है । इसको दवाने पर इसमें से पीले रंग का पदार्थ निकलता है । इस कीट की मादा पेड पर चढ़कर फलों का रस चूसती है । तथा डण्ठल कमजोर कर देती है जिससे फल टूटने लगते है ।

रोकथाम- पेड़ के तना के ऊपर 30-35 से.मी. ऊँचाई पर 25 से.मी. चौड़ी पॉलीथिन की पन्नी चारों ओर लपेटकर अच्छी तरह से बांध देनी चाहिये । तथा पन्नी के ऊपर अरण्डी के तेल और रेजिन का लेप कर देना चाहिये तथा पन्नी के नीचे पेड़ पर चारों ओर 10 से.मी. चौड़ी ग्रीस की पट्टी पोत देनी चाहिये । ऐसा करने से यह कीट पेड़ पर नही चढ़ पाता है यदि पौधे प्रभावित होने लगे तो नुवान की 0.04 प्रति. छिड़काव प्रभावकारी रहता है ।

कृषि विज्ञान केन्द्र टीकमगढ़ के वैज्ञानिक/कर्मचारियो का परिचय :

डा. शैलेन्द्र सिंह गौतम
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक (उद्यानिकी)

श्री बन्शी लाल साहू
विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)

डा. राकेश कुमार प्रजापति
विषय वस्तु विशेषज्ञ (पौध संरक्षण)

डा. संदीप कुमार खरे
विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु पालन)

श्री बृजलाल लिटौरिया
(वाहन चालक)

श्री मनोहरलाल चढ़ार
(वाहन चालक)

श्री ऐलिक हेन्री जौन
(संदेश वाहक)

प्रति,

बुक-पोस्ट

.....

.....

.....

प्रेषक :-
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़
टीकमगढ़ (म.प्र.) - 472001
दूरभाष-07683-244934

(Noble Printers-9993268032)

अपना मोबाइल नम्बर लिखवायें, घर बैठे कृषि की नई जानकारी एवं समस्याओं का समाधान पायें । सम्पर्क सूत्र- 07683-244934